ORIGINAL RESEARCH PAPER

Law

चीन की स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स की नीति व भारतीय सुरक्षा

KEY WORDS: प्रभुत्व संघर्ष, रणनीतिक घेरेबंदी, शक्ति राजनीति, सुरक्षा, सामरिक चुनौतियां, राष्ट्रीय हित।

कैप्टन (डॉ.) स्नेह लता एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, रक्षा अध्ययन विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार, हरियाणा

ABSTRACT

चीन का शांतिपूर्ण अभ्युदय, अमेरिका व चीन के मध्य प्रभुत्व संघर्ष, एशिया–प्रशांत क्षेत्र में शक्तिस्पर्धा, दक्षिणी चीन सागर में चीन की हतधर्मिता एवं एशिया, विशेषकर दक्षिण एशिया में भारत के विरुद्ध चीन द्वारा की जा रही रणनीतिक घेरेबंदी से जहां एक और वैश्विक व क्षेत्रीय शक्ति राजनीति के आयाम निरंतर जटिल होते जा रहे हैं, वहीं भारतीय सुरक्षा के समक्ष उत्पन्न हो रही ज्वलंत सामरिक चुनौतियां उसे आर्थिक, सामरिक, तकनीक, रक्षा व विकास तथा नाभिकीय प्रक्षेपास्त्रों को निरंतर अद्यतन करने हेतु विवश कर रही हैं। ऐसा लगता है कि इस एशियाई शताब्दी में भारत का सुरक्षा व कूटनीतिक उत्तरदायित्व निरंतर उसे इस बात के लिए उत्प्रेरित कर रहा है कि अब रक्षा उदासीनता, ढुलमुल व दिग्भ्रमित कूटनीतिक सम्मोहन का परित्याग करके अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षार्थ नवीन सामरिक संस्कृति की ओर अग्रसर होना चाहिए।

परिचय

दक्षिणी छोर पर हिन्द महासागर के जरिए चीन भारत को घेरना चाहता है। भारत को घेरने की कोशिश में पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश, म्यांमार और मालदीव जैसे देशों का इस्तेमाल कर रहा है। पाकिस्तान के ग्वादर पोर्ट, श्रीलंका के हंबनटोटा, बांग्लादेश के चिटगांव पोर्ट, म्यांमार का क्यौकप्यू पोर्ट, मालदीव के फेयधूफिनोल्लु द्वीप आदि पर चीन ने अपने बेस बनाए हैं। कंबोडिया से शुरू होकर म्यांमार, बांग्लादेश, श्रीलंका, मालदीव, पाकिस्तान से होते हुए ये रास्ता सुडान तक जाता है। अगर इस रास्ते को जोड़ते हैं तो ये साफ तौर पर भारत को घेरता हुआ दिखाई पड़ता है। भारत को घेरने की रणनीति के तहत ही चीन इन देशों के पोर्ट और द्वीप पर अपने बेस बना रहा है।

21वीं शताब्दी में एशिया के बढ़ रहे सामरिक गुरुत्व–प्रभाव का ही परिणाम है कि यह क्षेत्र बड़ी शक्तियों की स्पर्धा का केन्द्र बनता जा रहा तथा सभी बड़ी शक्तियों की स्पर्धा एशिया में ही संकेन्द्रित होती जा रही है। दक्षिण एशिया का केन्द्रक व प्रमुख राष्ट्र होने का ही यह परिणाम है कि भारत के निरंतर विस्तृत हो रहे सामरिक, राजनैतिक एवं आर्थिक क्षितिज पर अंकुश हेतु चीन की एशियाई नीतियां संकेन्द्रित हो रही हैं। उक्त परिप्रेक्ष्य में जहां एक ओर चीन भारत के सभी पड़ोसी देशों को अपने सामरिक–आर्थिक प्रभाव में लाने की विभिन्न गतिविधियां चला रहा है वहीं 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' नीति और अब 'वन बेल्ट वेन रोड' नीति के माध्यम से भारत की सामरिक घेरेबंदी करके हिन्द महासागरीय क्षेत्र पर नियंत्रण हेतु प्रयत्न कर रहा है।

चीन की "स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स" की नीति

"स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स" की बात का जिक्र 2004 में पेंटागन ने 'एशिया में ऊर्जा का भविष्य' नाम की एक खुफिया रिपोर्ट में किया था। इस रिपोर्ट के अनुसार चीन द्वारा दक्षिण चीन सागर से लेकर मलक्का संधि, बंगाल की खाड़ी और अरब की खाड़ी तक सामरिक ठिकाने (बंदरगाह, हवाई पट्टी, निगरानी–तंत्र इत्यादि) तैयार किए जा रहे है। हालांकि रिपोर्ट में कहा गया था कि चीन ये ठिकाने अपने ऊर्जा–स्रोत और तेल से भरे जहाजों के समुद्र में आवागमन की सुरक्षा के लिए तैयार कर रहा है। लेकिन जरुरत पड़ने पर इन सामरिक–ठिकानों को सैन्य–जरुरतों के लिए भी इस्तेमाल कर सकता है। चूंकि चीन यह मानता है कि 21 वीं सदी उसकी है और सम्पूर्ण एशिया में भारत ही एकमात्र शक्ति है जो हर दृष्टि से उसे चुनौती दे सकता है। अतः उसने भारत के पड़ोसी देशों को कर्ज के जाल में फंसाकर उनके यहां बंदरगाहों, हवाई पट्टियों तथा निगरानी तंत्र के निर्माण में विशेष रुचि दिखाई।

हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन द्वारा विकसित किए जा रहे द्वीप

चीन द्वारा 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' की नीति के तहत हिन्द महासागर क्षेत्र में रणनीतिक रूप से विकसित किए जा रहे द्वीपों का विवरण इस प्रकार है–

ग्वादर पोर्ट (पाकिस्तान)

चीन द्वारा यह बंदरगाह 'चीन–पाकिस्तान आर्थिक कॉरिडोर' (सीपीईसी) परियोजना के तहत विकसित किया जा रहा है और इसे बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव और समुद्री सिल्क रोड परियोजनाओं के बीच भी एक मुख्य कड़ी के रूप में माना जाता है। पाकिस्तान ने एक समझौते के तहत 18 फरवरी 2013 को ग्वादर के प्रबंधन का अधिकार चीन की कंपनी को 40 साल के लिए सौंप दिया। चीन द्वारा 'चीन पाकिस्तान इकोनामिक कॉरिडोर' के माध्यम से ग्वादर पोर्ट तक पहुंचना तथा हिन्द महासागर में प्रवेश करना इस क्षेत्र में एक गंभीर चुनौती है। विशेषज्ञों का मानना है कि सीपीईसी और ग्वादर बंदरगाह चीन और पाकिस्तान की सैन्य क्षमताएं बढ़ाएगा व अरब सागर में चीनी नौसेना की आसान पहुंच को संभव बनाएगा।

जिबूती

जिबूती में चीन ने अपना नेवल बेस बना लिया है। फरवरी 2016 में चीन ने इस पर काम शुरू किया था। लाल सागर के किनारे बसे इस देश को चीन भारत को घेरने की अपनी स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स की नीति के शुरुआत के तौर पर इस्तेमाल कर रहा है। हॉर्न ऑफ अफ्रीका में जिबूती की अवस्थिति उसे पूरे अफ्रीका और एशिया में शक्ति प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण स्थलों में से एक बनाती है।

बगामोयो पोर्ट (तंजानिया)

तंजानिया में बगामोयो बंदरगाह के प्रोजेक्ट ने चीन और तंजानिया के रिश्तों के एक नए युग की शुरुआत की थी। बगामोयो बंदरगाह के प्रोजेक्ट पर चीन और तंजानिया ने वर्ष 2013 में दस्तखत किए थे। इस बंदरगाह को चीन द्वारा विकसित किया जा रहा है।

सेशेल्स द्वीप

सेशेल्स हिन्द महासागर में नौसैनिक प्रभुत्व के लिए अमेरिका और भारत के साथ होड़ में चीन के लिए यह एक संभावित सामरिक ठिकाना साबित हो रहा है। यह अदन की खाड़ी के करीब दक्षिण में है जहां चीन की नौसेना 2008 से वाणिज्य जहाजों की रखवाली करने के अंतर्राष्ट्रीय प्रयास में शामिल होती रही है।

हम्बनटोटा (श्रीलंका)

चीन ने श्रीलंका के हम्बनटोटा बंदरगाह से हिन्द महासागर में अपनी नौसैनिक गतिविधियों के संचालन की योजना बनाई है। 9 दिसम्बर 2017 को श्रीलंका ने सामरिक रूप से अत्यन्त महत्वपूर्ण हंबनटोटा बन्दरगाह को औपचारिक रूप से चीन को सौंप दिया। इस बन्दरगाह का नियन्त्रण एक समझौते के तहत 99 वर्षों के लिए चीनी कम्पनियों को दे दिया।

मालदीव

मालदीव के फेयधूफिनोल्लु द्वीप में उसने अपना मिलिट्री बेस बना लिया। 2066 तक के लिए मालदीव की सरकार से चीन ने इस द्वीप को लीज पर लिया हुआ है। हिन्द महासागर में इस मिलिट्री बेस की दूरी लक्ष्यद्वीप से केवल 900 और भारत की मुख्य भूमि से 1 हजार किलोमीटर की दूरी पर होगा।

चटगांव (बांग्लादेश)

बांग्लादेश में चटगांव बंदरगाह के विकास में भी चीन ने आर्थिक मदद मुहैया कराई। ये बंदरगाह बंगाल की खाड़ी के तट पर है। वह इस पर कब्जे से समुद्री जाल बिछाना चाहता है। चीन ने बांग्लादेश में बहुत निवेश किया है और बांग्लादेश और म्यांमार दोनों ओबीओआर की परियोजना के महत्वपूर्ण बिंदु हैं। चीन द्वारा बांग्लादेश से चटगांव के पास नौसैनिक अड्डे का उपयोग करने के लिए प्रयासरत है।

कोको और हांगई द्वीप (म्यांमार)

हिन्द महासागर में स्वयं को शक्तिशाली बनाए रखने के लिए चीन ने म्यांमार को अपना मित्र बना कर उसे सैन्य संबंध बढ़ाए और म्यांमार को परमाणु तथा मिसाइल क्षेत्र में सहयोग दिया। चीन ने म्यांमार के अनेक द्वीपों पर नौसैनिक सुविधाएं बढ़ा रखी है जिससे भारतीय नौसेना की गतिविधियों पर नजर रखी जा रही है। म्यांमार के हांगई द्वीप पर राडार व सोनार जैसी संचार की सुविधाएं तथा क्याक्प्यू में भी चीन बंदरगाह का निर्माण कर रहा है। अंडमान निकोबार द्वीप समूह में भारतीय सैनिक गतिविधियों पर नजर रखना भी चीन के लिए आसान हो गया है।

कोह कोंग एवं रीम नेवल बेस (कंबोडिया)

कंबोडिया के कोह कोंग प्रांत के दारासाकोर में चीन ने निवेश किया है जिसमें कंबोडिया के 20 प्रतिशत तटरेखा शामिल हैं। यह क्षेत्र चीन की एक कंपनी को 99 साल के पट्टे पर दिया गया है। जहां चीन की सामरिक एवं व्यापारिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु निर्माण के लिए योजनाएं हैं।

हैनान द्वीप (चीन)

यह दक्षिण–पूर्वी चीन में दक्षिणी चीन सागर में स्थित एक द्वीप है। चीन ने दक्षिण चीन सागर में हैनान द्वीप के दक्षिणी छोर पर सान्या के एक समुद्री बेस पर अपनी पनडुब्बियां तैनात कर रखी है जो कि भारत के लिए चिंताजनक है। यह बेस मलक्का की खाड़ी से लगभग 12 समुद्री मील की दूरी पर स्थित है। इस बेस में अंडरग्राउंड सुविधाएं भी है जिसके कारण पनडुब्बियों की पहचान करना कठिन है।

चीन के स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स प्रोजेक्ट का भारत की सुरक्षा पर प्रभाव

सामरिक प्रभाव

स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स चीन द्वारा भारत को घेरने का प्रयास है। चीन के इस कदम से हिंद महासागर में भारत का मौजूदा सामरिक दबदबा कम होगा। जो देश भारत को चीन के प्रति संतुलन के रूप में देखते हैं, वे खुद को चीन के कब्जे में हो जाएंगे।

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा

रक्षा विश्लेषकों के अनुसार, यह सिद्धांत, चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारे और चीन के वन बेल्ट एंड वन रोड इनिशिएटिव के अन्य घटकों जैसी पहलों के साथ, भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करता है। इस तरह की रणनीति भारत को घेर लेगी, जिससे उसकी शक्ति प्रक्षेपण, व्यापार और संभवतः क्षेत्रीय अखंडता को खतरा पैदा होगा।

भारत की समुद्री सुरक्षा के लिए खतरा

यह भारत की समुद्री सुरक्षा को खतरे में डालता है। चीन अपने अधिक पनडुब्बियों, विध्वंसक जहाजों और जहाजों का निर्माण करके अपनी मारक क्षमता बढ़ा रहा है। ग्वादर में चीन अपना एक नौसैनिक सैन्य अड्डा विकसित कर रहा है। ग्वादर में स्थिति मजबूत होने के बाद चीन कभी भी हिन्द महासगर से भारत को चुनौती दे सकता है।

भारत के संसाधनों पर प्रभाव

भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका असर यह होगा कि भारतीय संसाधनों को रक्षा और सुरक्षा की ओर मोड़ दिया जाएगा। नतीजतन, अर्थव्यवस्था अपनी पूरी क्षमता तक नहीं पहुंच पाएगी, जिससे आर्थिक विकास प्रभावित होगा। यह भारत और पूरे पूर्व और दक्षिण पूर्व क्षेत्र में अस्थिरता को बढ़ा सकता है।

चीन की स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स का मुकाबला करने की भारत की योजना

भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी

भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी को दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों के साथ भारत की अर्थव्यवस्था को एकीकृत करने के प्रयास के रूप में पेश किया गया था। इसका उपयोग वियतनाम, जापान, फिलीपींस, दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया, सिंगापुर और थाईलैंड के साथ चीन का विरोध करने में भारत की सहायता के लिए सैन्य और रणनीतिक सौदे करने के लिए किया गया है।

भारत की नेकलेस ऑफ डायमंड्स नीति

भारत चीन द्वारा बनाए गए "स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स" का मुकाबला करने के लिए "नेकलेस ऑफ डायमंड्स" बना रहा है। इसमें निम्नलिखित तत्व शामिल हैं–

- *चांगी नेवल बेस, सिंगापुरः 2018 में, प्रधानमंत्री मोदी ने सिंगापुर के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। भारतीय नौसेना इस बेस के माध्यम से अपने जहाज में फिर से ईंधन भर सकती है और पुनः सशस्त्र कर सकती है।*
- *चाबहार पोर्ट, ईरानः 2016 में, प्रधानमंत्री मोदी ने इस बंदरगाह के निर्माण के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। यह बंदरगाह अफगानिस्तान और मध्य एशिया के लिए महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग है।*
- *अजंम्पशन द्वीप, सेशेल्सः 2015 में, भारत और सेशेल्स ने इस क्षेत्र में नौसेना के बेस के विकास पर सहमति व्यक्त की। यह बेस भारत के लिए रणनीतिक महत्व का है क्योंकि चीन समुद्री सिल्क रूट से अफ्रीकी महाद्वीप में अपनी उपस्थिति बढ़ाना चाहता है।*
- *इंडोनेशिया में साबांग बंदरगाहः 2018 में, भारत को साबांग बंदरगाह तक सैन्य पहुंच प्राप्त हुई, जो मलक्का जलडमरूमध्य के प्रवेश द्वार पर स्थित है। इस क्षेत्र से व्यापार और कच्चे तेल का एक बड़ा हिस्सा चीन को जाता है।*
- *डुकम बंदरगाह, ओमानः 2018 में, इंडोनेशिया में साबांग पोर्ट के बाद भारत को एक और सैन्य सुविधा मिली। डुक्म पोर्ट ओमान के दक्षिण–पूर्वी समुद्री तट पर स्थित है।*

सैन्य संबंधों में सुधार

अपनी नौसेना को सुधारने और प्रशिक्षित करने के लिए, भारत ने म्यांमार के साथ एक रणनीतिक नौसैनिक संबंध तैयार किया है जिससे भारत को रणनीतिक लाभ होगा। इसने जापान, ऑस्ट्रेलिया और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ क्षेत्र में सैन्य सहयोग के लिए समझौते भी किए हैं। चारों देश मिलकर आईओआर क्षेत्र में सामूहिक सैन्य अभ्यास करते हैं, जिसे 'क्वाड' कहा जाता है।

तटीय रडार नेटवर्क का निर्माण

बांग्लादेश – भारत ने हाल ही में बांग्लादेश के समुद्र तट के साथ 20 तटीय निगरानी रडार सिस्टम स्थापित करने के लिए बांग्लादेश के साथ एक समझौता किया है। इससे भारत को चीनी युद्धपोतों को देखने में मदद मिलेगी जो बार–बार बंगाल की खाड़ी का दौरा कर रहे हैं।

मालदीव – भारत मालदीव में 10 तटीय रडार सिस्टम स्थापित करेगा। ये रडार हिंद महासागर क्षेत्र में चलने वाले जहाजों की लाइव इमेज, वीडियो और स्थान की जानकारी प्रसारित करेंगे। यह परियोजना भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड द्वारा निष्पादित की गई है।

श्रीलंका – श्रीलंका में 6 तटीय निगरानी रडार (सीएसआर) स्थापित किए गए हैं। रिपोर्टों के अनुसार, भारत श्रीलंका में कम से कम 10 और सीएसआर स्थापित करने की उम्मीद कर रहा है।

मॉरीशस – मॉरीशस में 8 तटीय निगरानी रडार स्थापित किए गए हैं।

सेशेल्स – सेशेल्स में 1 तटीय निगरानी रडार (सीएसआर) प्रणाली 2015 में स्थापित की गई है। सेशेल्स में लगभग 32 और तटीय निगरानी रडार प्रणालियों की योजना है।

भारत – बीईएल ने देश में 2015 में 46 तटीय रडार स्टेशन और 16 कमांड और नियंत्रण प्रणाली स्थापित की थी। बाद के चरण में 38 और तटीय रडार स्टेशन और 5 कमांड और कंट्रोल सिस्टम स्थापित किए जाएंगे।

फ्रांस के साथ समझौता

भारत और फ्रांस ने हिंद महासागर में एक–दूसरे के युद्धपोतों के लिए अपने नौसैनिक ठिकानों को खोलने से संबंधित एक रणनीतिक समझौता किया है। यह भारतीय नौसेना को महत्वपूर्ण फ्रांसीसी बंदरगाहों तक पहुंच प्रदान करता है, जिसमें जिबूती भी शामिल है, जहां चीन का एकमात्र विदेशी सैन्य अड्डा है।

निष्कर्ष

वास्तव में भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास, समृद्धि, व्यापार, वैज्ञानिक व औद्योगिक प्रगति, क्षेत्रीय अखंडता और राजनीतिक स्वतंत्रता हिन्द महासागरीय क्षेत्र की सुरक्षा में रक्षा पर ही निर्भर करती है। उल्लेखनीय है कि 21वीं शताब्दी में एक शक्ति संतुलन केंद्र के रूप में उभर रहे भारत के बहुमुखी विकास में राष्ट्रीय शक्ति के निर्माण ऊर्जा आवश्यकताओं की निरंतर बढ़ रही उपादेयता ने हिन्द महासागर के भू राजनीतिक व रणनीतिक महत्व को बढ़ा दिया है। यही कारण है कि जहां एक और फारस व अदन की खाड़ी से पूर्वी एशिया तक विस्तृत सामुद्रिक मार्ग के गुरुत्व केंद्र में भारतीय स्थिति, अंडमान निकोबार द्वीप क्षेत्र तथा मलक्का स्ट्रेट मार्ग की सामरिक महत्व भारत को प्रभावी नौ सैन्य शक्ति बनने हेतु विवश कर रही है वहीं वैश्विक शक्ति सरंचना में आर्थिक विकास हेतु हिन्द महासागर पर निर्भरता उसकी सुरक्षा जिम्मेदारियों का अहसास भी कराती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *मिश्र, एस.के., इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी : पीएम मोदी रिजिम, उदय पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2019*
2. *दीक्षित, जे.एन. भारतीय विदेश नीति, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018*
3. *यादव, आर. एस. भारत की विदेश नीति, पियर्सन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013*
4. *पंत, पुष्पेश, 21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, मैक्ग्रा हिल प्रकाशन, 2018*
5. *मिश्र, सुरेन्द्र कुमार, भारतीय सुरक्षा एवं विदेश नीति, उदय पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2018*
6. *वाजपेई उषा, भारत चीन संबंध, नेहा पब्लिशर्स, नई दिल्ली 2013*
7. *शर्मा संजय कुमार, भारत चीन संबंधः बदलता परिदृश्य, एविन्सपब पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2020*
8. *गुप्ता, मणिक लाल, भारत–चीन कूटनीतिक संबंध, अटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2019*
9. *शर्मा, भगवती प्रकाश, चीन एक आर्थिक व राजनीतिक चुनौती, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020*
10. *अनेकांत विपुल, भारत की आंतरिक सुरक्षा की मुख्य चुनौतियां, मैकग्रा हिल एजुकेशन, नोएडा, 2022*